पांच में से एक अकशेरुकी प्रजाति खतरे में

ज़ुऑलॉजिकल सोसायटी ऑफ लंदन ने हाल ही में एक रिपोर्ट प्रकाशित की है जिसमें बताया गया है कि दुनिया की हर पांच में से एक अकशेरुकी प्रजाति खतरे में है।

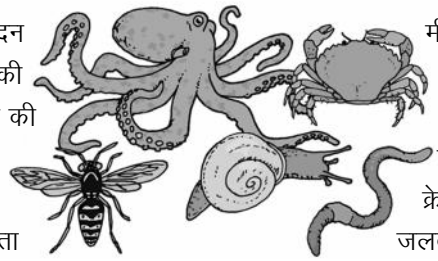

पृथ्वी पर 99 प्रतिशत जैवविविधता अकशेरुकी (यानी रीढ़ विहीन) जीवों द्वारा प्रदर्शित होती है, हालांकि अभी तक इनके संरक्षण की कोई व्यवस्थित समीक्षा नहीं की गई है। 1963 से इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंज़र्वेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) द्वारा प्रकाशित की जा रही विलुप्त प्रजातियों की रेड लिस्ट में केवल 1 प्रतिशत अकशेरुकी प्राणियों को खतरे में बताया गया है।

लंदन स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ ज़ुऑलॉजी के जैव विविधता वैज्ञानिक बेन कोलेन का कहना है कि "मैंने जब पहली बार इस रेड लिस्ट को देखा तब पाया कि इसमें बड़े, करिश्माई प्राणियों पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया है। और हम पिछले पांच सालों से इस लिस्ट को ठीक करने में लगे हुए हैं।"

कोलेन और उनके साथियों ने पाया कि केंकड़े और घोंघे जैसे मीठे पानी के जंतुओं के साथ-साथ पृथ्वी और समुद्र में पाई जाने वाली कई अकशेरुकी प्रजातियां भी विलुप्ति की कगार पर हैं। तितलियों और टिड्डों जैसी फुर्तीली प्रजातियों पर खतरा कम है।

इस रिपोर्ट में बताया गया है कि मीठे पानी में पाई जाने वाली 34 प्रतिशत अकशेरुकी प्रजातियां खतरे में हैं, जिनमें मीठे पानी में पाए जाने वाले आधे से ज़्यादा घोंघे और स्लग्स शामिल हैं। दक्षिणपूर्वी यू.एस. में बांधों और प्रदूषण के कारण 40 प्रतिशत मोलस्क और क्रेफिश खत्म होने की कगार पर हैं। जलवायु परिवर्तन के चलते एक-तिहाई चट्टान-निर्माता कोरल खतरे में हैं। इसका कारण कोरल का विरंजन और समुद्रों का अम्लीयकरण है।

कुल मिलाकर प्राकृतवासों का विनाश, प्रदूषण और बाहरी प्रजातियों की घुसपैठ अकशेरुकी विविधता के लिए सबसे बड़े खतरे हैं। खतराग्रस्त अकशेरुकी प्राणियों का अनुपात (करीब 20 प्रतिशत) लगभग कशेरुकी प्राणियों और वनस्पतियों के समान ही है।

अकशेरुकी जंतुओं के बारे में जानकारी के अभाव और कई प्रजातियों के अचिंहित होने के कारण में कोलेन और उनके साथियों ने एक 'सेम्पल एप्रोच' उपयोग किया। इसमें लगभग 1500 प्रजातियों के 4 समूहों का अध्ययन किया गया है - मीठे पानी के घोंघे, पतंगे, गुबरैले और तितलियां। इनके अलावा कोरल्स, क्रेफिश वगैरह का भी आकलन किया गया। अध्ययन के लिए आईयूसीएन के मापदंडों का ही उपयोग किया गया था। डैटा इकट्ठा करने के लिए कई विशेषज्ञों से सलाह ली गई।

मगर दूसरे वैज्ञानिकों को लगता है कि इतने कम डैटा के आधार पर कुछ नहीं कहा जा सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***